रुचिरा भाग 3
पाठ 15 — प्रहेलिका

माड्यूल - 1

प्रस्तुतकर्ता –
डॉ विभा मिश्रा
संविदा अध्यापिका
हिंदी / संस्कृत
प.ऊ.के.वि. कुडनकुलम

पञ्चदशः पाठः

प्रहेलिकाः

[पहेलियाँ मनोरञ्जन की प्राचीन विधा है। ये प्रायः विश्व की सारी भाषाओं में उपलब्ध हैं। संस्कृत के कवियों ने इस परम्परा को अत्यन्त समृद्ध किया है। पहेलियाँ जहाँ हमें आनन्द देती हैं, वहीं समझ-बूझ की हमारी मानसिक व बौद्धिक प्रक्रिया को तीव्रतर बनाती हैं। इस पाठ में संस्कृत प्रहेलिका (पहेली) बूझने की परम्परा के कुछ रोचक उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं।]

कस्तूरी जायते कस्मात्?
को हन्ति करिणां कुलम्?
किं कुर्यात् कातरो युद्धे?
मृगात् सिंहः पलायते ॥1॥

हिन्दी अर्थ –
कस्तूरी कहाँ से उत्पन्न होती है ?
हाथियों के कुल को कौन मारता है ?
कायर व्यक्ति युद्ध में क्या करता है ?
हिरण से (डरकर) शेर भागता है।। 1।।

उत्तर –
मृगात् . हिरण से
सिंहः . शेर
पलायते . भागता है

शब्दार्थ –
जायते = उत्पन्न होती है
करिणाम् = हाथियों के
कातरो = कायर

सीमन्तिनीषु का शान्ता?
राजा कोऽभूत् गुणोत्तमः?
विद्वद्भिः का सदा वन्द्या?
अत्रैवोक्तं न बुध्यते ।।2।।

हिन्दी अर्थ –
नारियों में सबसे शान्त कौन है ?
सबसे गुणवान राजा कौन हुआ ?
विद्वानों द्वारा कौन वंदनीया है ?
(उत्तर) यहीं बताया गया है, समझा नहीं जा रहा है।। 2।।

उत्तर –
प्रथम पंक्ति का पहला और अन्तिम वर्ण = सी + ता = सीता
दूसरी पंक्ति का पहला और अन्तिम वर्ण = रा + मः = रामः
तीसरी पंक्ति का पहला और अन्तिम वर्ण = वि + द्या = विद्या

सीमन्तिनीषु	= नारियों में	विद्वद्भिः	= विद्वानों द्वारा
कोऽभूत्	= कौन हुआ	अत्रैवोक्तं	= यहीं बताया गया है
वन्द्या	= वंदनीया	न बुध्यते	= समझा नहीं जा रहा है

कं सञ्जघान कृष्ण:?
का शीतलवाहिनी गङ्गा?
के दारपोषणरता:?
कं बलवन्तं न बाधते शीतम् ।।3।।

हिन्दी अर्थ –

कृष्ण ने किसको मारा ?
शीतल जलवाहिनी गंगा कौन है / कहाँ बहती है ?
पत्नी का पोषण कौन करते हैं ?
किस बलवान को सरदी नहीं लगती। 3।।

उत्तर – प्रथम पंक्ति के 1, 2, 3 वर्णों से बना शब्द = कं + सञ् = कंसम्
दूसरी पंक्ति के 1, 2 वर्णों से बना शब्द = का + शी = काशी
तीसरी पंक्ति के पहले वर्ण के संयोग से बना शब्द = केदारपोषणरताः
चौथी पंक्ति के पहले व दूसरे शब्दों के योग से बना शब्द = कंबलवन्तम्

शब्दार्थ –

कंसम्	= कंस को
केदारपोषणरताः	= किसान
कंबलवन्तम्	= कंबल वाले व्यक्ति को

वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराज:
त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणि:।
त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी
जलं च बिभ्रन्न घटो न मेघ: ।।4।।

हिन्दी अर्थ –

वृक्ष के अग्रभाग में रहता है पर पक्षिराज/गरुड़ नहीं है।
तीन नेत्रों वाला है पर शिव नहीं है।
छाल के वस्त्र पहनता है पर संन्यासी नहीं है।
जल धारण किए हुए है पर न तो घड़ा है न बादल।। 4
बताओ कौन ?

उत्तर – नारिकेलम् – नारियल

शब्दार्थ –

वृक्षाग्रवासी	= पेड़ पर लगने वाला
शूलपाणि:	= त्रिशूल है हाथ में जिसके – शिवजी
बिभ्रन्न	= धारण किए हुए

भोजनान्ते च किं पेयम्?
जयन्तः कस्य वै सुतः?
कथं विष्णुपदं प्रोक्तम्?
तक्रं शक्रस्य दुर्लभम् ।।5।।

हिन्दी अर्थ –

भोजन के बाद क्या पीना चाहिए ?
जयन्त किसका पुत्र है ?
स्वर्ग / मौक्ष को कैसा बताया गया है ?
छाछ इन्द्र का दुर्लभ है।। 5।।

उत्तर –

तकम् – छाछ
शकस्य – इन्द्र का
दुर्लभम् – दुर्लभ

शब्दार्थ –

पेयम् = पीना चाहिए
विष्णुपदं = स्वर्ग या मोक्ष
प्रोक्तम् = कहा गया है